BA - 1 Date Page - 1
Paper - 1 24/10/20
Unit - 2

Dr. Raj Gopal.
Assistant Professor (G/P.T)
Department of Philosophy.
V.S.J. College Rajnagar.
Mail ID:- rajgopal7756@gmail.com

भारतीय दर्शन की प्रमुख विशेषताएं

आत्मा की सत्ता मे विश्वास :- भारतीय दर्शन की प्रमुख विशेषताएं यह है कि सभी भारतीय दर्शन चार्वाक को छोड़कर आत्मा की सत्ता मे विश्वास करते हैं। उपनिषद से लेकर वेदांत तक आत्मा की खोज पर जोड़ दिया है। यहाँ के दार्शनिकों ने साधारणतया आत्मा को अमर माना है। आत्मा और शरीर मे मौलिक अंतर यह है कि आत्मा अविनाशी है जबकि शरीर नश्वर है। विभिन्न दार्शनिक सम्प्रदायों मे आत्मा संबंधित विचार निम्नलिखित हैं।

चार्वाक :- चार्वाक आत्मा और शरीर दोनों को एक दूसरे का पर्याय माना है। चैतन्यविशिष्ट देह को चार्वाक आत्मा मानता है। आत्मा और शरीर एक है। शरीर का नाश होने पर आत्मा का भी विनाश हो जाता है। चार्वाक के इस मत को देहात्मवाद कहा जाता है। इस प्रकार चार्वाक दर्शन का आत्मा संबंधित विचार भौतिकवादी है।

बौद्ध दर्शन :- बुद्ध क्षणिक आत्मा मे विश्वास करते हैं। वे आत्मा को चेतना का प्रवाह मानते हैं। वे वास्तविक आत्मा को भ्रम कहकर व्यवहारवादी आत्मा को माना है जो निरन्तर परिवर्तनशील है। बुद्ध के आत्मा संबंधी विचार अनात्मवादी मत कहा जाता है।

जैन दर्शन :- जैनियों ने जीवों को चैतन्ययुक्त कहा है। चेतना आत्मा मे निरंतर विद्यमान रहती है। आत्मा मे

Scanned with CamScanner

चैतन्य और विचार दोनों समाविष्ट हैं। आत्मा ज्ञाता, कर्ता, भोक्ता है। आत्मा की शक्ति अनंत है। इसमें चार प्रकार की पूर्णताएं हैं। जैसे - अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त वीर्य, अनन्त आनन्द विद्यमान है।

न्याय- वैशेषिक :- आत्मा के संबंध में न्याय और वैशेषिक का यथार्थवादी मत है। न्याय और वैशेषिक ने आत्मा को स्वाभावतः अचेतन माना है। आत्मा में चेतना का संचार तभी होता है जब आत्मा का संपर्क मन, शरीर और इन्द्रिय से होता है। इस प्रकार से चेतना आत्मा का आगन्तुक गुण है। मोक्ष की अवस्था में आत्मा में चेतना का अभाव हो जाता है। वे आत्मा को ज्ञाता, कर्ता और भोक्ता मानते हैं।

मीमांसा दर्शन :- मीमांसा दर्शन भी न्याय वैशेषिक की तरह चेतना को आत्मा का आगन्तुक गुण मानते हैं। मीमांसा दर्शन में आत्मा को नित्य एवं विभु माना गया है।

सांख्य दर्शन :- सांख्य आत्मा को चैतन्य मानता है। चेतना आत्मा का मूल लक्षण है। चैतन्य के अभाव में आत्मा की कल्पना करना आत्म निरंतर जाता है। वह ज्ञान का विषय नहीं हो सकता है। सांख्य आत्मा को अकर्ता कहा है। आत्मा आनन्द-विहित है, क्योंकि आनन्द गुण का फल है और आत्मा त्रिगुणातीत है।

अद्वैत वेदान्त दर्शन :⇒ शंकर ने भी चेतना को आत्मा का मूल लक्षण माना है। वे आत्मा को सच्चिदानन्द मानते हैं। आत्मा न ज्ञाता है और न ज्ञान का विषय है। जहाँ तक आत्मा की संख्या का सवाल है शंकर को छोड़कर सभी भारतीय दार्शनिक आत्मा को अनेक माना है। शंकर एक ही आत्मा को सत्य मानते हैं। न्याय वैशेषिक दो प्रकार की आत्माओं को मानता है (i) जीवात्मा (ii) परमात्मा। जीवात्मा अनेक है, परन्तु परमात्मा एक है।

इस प्रकार से भारतीय दर्शन की सारी विशेषताएं स्पष्ट है कि सभी भारतीय दार्शनिक आत्मा की सत्ता में विश्वास करते हैं।

Scanned with CamScanner